अध्ययन सामग्री
बी·ए· (संस्कृत) पार्ट 2
प्रश्नपत्र - चतुर्थ
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच· डी· जैन कॉलेज
आरा (वी·कुं॰ सिं॰ वि॰)

16·05·20

यञश्च

शब्दार्थ है - (च) और (यञः) यञ् से। यहाँ सूत्रस्थ 'च' से ही ज्ञात हो जाता है कि यह सूत्र अपूर्ण है। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' से 'ङीप्' और 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'प्रातिपदिकात्' की अनुवृत्ति करनी होगी। 'स्त्रियाम्' का अधिकार तो यहाँ है ही। सूत्रस्थ 'यञः' प्रातिपदिकात् का विशेषण बनता है, अतः उसमें तदन्त विधि हो जाती है।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा - 'यञ्' प्रत्ययान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में 'ङीप्' (ई) प्रत्यय होता है। अकार का लोप हो जाता है।

उदाहरण - यञ् प्रत्ययान्त प्रातिपदिक 'गार्ग्य' से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् प्रत्यय हो 'गार्ग्य ई' रूप बनने पर अन्त्य लोप होकर 'गार्ग्य् ई' रूप बनता है।

हलस्तद्धितस्य

सूत्र का शब्दार्थ है -(हलः) हल् के पश्चात् (तद्धितस्य) तद्धित के। किन्तु क्या होता है और किस स्थिति में होता है यह जानने के लिए 'सूर्यतिष्यागस्त्य-मत्स्यानाम्॰ -' से 'यः' और 'उपधायाः' 'यस्येति च' से 'इति' तथा 'ढे लोपो॰ -' से 'लोपः' की

Scanned by CamScanner

अनुवृत्ति करनी होगी। 'भस्य' और 'अङ्गस्य' का अधिकार तो है ही।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा – ईकार परे होने पर भसंज्ञक अङ्ग के हल् (व्यञ्जन वर्ण) से पर तद्धित के उपधाभूत यकार का लोप होता है।

उदाहरण – 'गार्ग्य ई' में ईकार परे होने के कारण भसंज्ञक अङ्ग गार्ग्य के हल् गकार से पर तद्धित के उपधाभूत यकार का लोप हो 'गार्ग ई' – गार्गी रूप सिद्ध होता है।

रूपसिद्धिः – गार्गी

गर्गस्यापत्यं स्त्री इस विग्रह में 'गर्गादिभ्यो यञ्' से 'यञ्' होता है और 'यस्येति च' से अन्तिम 'अ' का लोप एवं वृद्धिकार्य होकर 'गार्ग्य' शब्द बनता है। स्त्रीत्व विवक्षा में 'यञश्च' सूत्र से ङीप् होता है।

गार्ग्य ई

'यस्येति च' से अकार के लोप के बाद –

गार्ग्य् ई

'हलस्तद्धितस्य' से यकार का लोप होने पर

गार्ग् ई – गार्गी शब्द बनता है

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति

गार्गी सु

सु के उ की इत्संज्ञा तथा लोप होने पर

गार्गी स्

'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' से स् का लोप होकर गार्गी प्रयोग सिद्ध होता है।

Scanned by CamScanner

वयसि प्रथमे

सूत्र का शब्दार्थ है – (प्रथमे) प्रथम (वयसि) वय अर्थ में। किन्तु क्या होता है और किस स्थिति में होता है – यह जानने के लिए 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' से 'ङीप्', 'अजाद्यतष्टाप्' से 'अतः' 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'प्रातिपदिकात्' तथा अधिकार सूत्र 'स्त्रियाम्' की अनुवृत्ति करनी होगी। 'अतः' प्रातिपदिकात् का विशेषण है, अतः उसमें तदन्त विधि हो जाती है। सूत्रस्थ 'वय' का अर्थ है – कालकृत शरीरावस्था। ये अवस्थाएँ तीन हैं – कौमार, यौवन और वार्द्धक्य। अतः प्रथम वय का अर्थ होगा – कौमारावस्था।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा – कौमारावस्था में वर्तमान अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् (ई) प्रत्यय होता है।

उदाहरण –

कौमारावस्थावाची अकारान्त प्रातिपदिक 'कुमार' से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् प्रत्यय हो 'कुमार ई' रूप बनता है। तब अकार लोप हो 'कुमार् ई – कुमारी' रूप सिद्ध होता है।

'वयस्यचरम् इति वक्तव्यम्' वार्तिक से यौवनावस्थावाची शब्दों से भी 'ङीप्' प्रत्यय होता है। 'वभ्रूट' से 'वभ्रूटी' या 'चिरण्ट' से 'चिरण्टी'। प्राप्तयौवना स्त्री को 'वभ्रूटी' और 'चिरण्टी' कहते हैं। इस प्रकार कौमारावस्थावाचक और यौवनावस्थावाचक अकारान्त प्रातिपदिक से 'ङीप्' प्रत्यय होता है। केवल अन्तिम अवस्था (वार्द्धक्यावस्था) वाचक शब्दों से ही 'ङीप्' प्रत्यय नहीं होता।

कन्या शब्द के प्रथम वयोवाची होने पर भी प्रकृत सूत्र से 'ङीप्' नहीं होता क्योंकि 'कन्यायाः कनीन च' ऐसा निर्देश पाणिनि के सूत्र में किया गया है।

सूत्र में 'अतः' पद की अनुवृत्ति के कारण 'शिशुः' पद में भी 'उकारान्त' होने के कारण इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं हुई है।

Scanned by CamScanner

रूपसिद्धिः – कुमारी

'कुमार' शब्द के अदन्त होने के कारण स्त्रीत्व की विवक्षा में 'अजाद्यतष्टाप्' से 'टाप्' प्रत्यय प्राप्त था जिसका बाध कर 'वयसि प्रथमे' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय होता है।
क्योंकि कुमार शब्द प्रथम वयो वाचक है।
'लशक्वतद्धिते' से 'ङकार' की इत्संज्ञा तथा
'हलन्त्यम्' से पकार की इत्संज्ञा होने तथा
'तस्य लोपः' से इत्संज्ञा का लोप होने पर 'ई' शेष रहता है

कुमार ई

'यस्येति च' सूत्र से अकार लोप होने पर
कुमार् ई – कुमारी शब्द बनता है।
'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति आती है –

कुमारी सु

'सु' के 'उ' की इत्संज्ञा तथा लोप होने पर 'स्' शेष रहता है

कुमारी स्

'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' से 'स्' का लोप होकर
कुमारी पद बनता है।

द्विगोः

सूत्र का शब्दार्थ है – (द्विगोः) द्विगु से। किन्तु क्या होता है और किस स्थिति में होता है इसका पता सूत्र से नहीं चलता। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'स्वन्नेभ्यो ङीप्' से 'ङीप्', 'अजाद्यतष्टाप्' से अतः और 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से प्रातिपदिकात् की अनुवृत्ति करनी होगी। स्त्रियाम् का अधिकार तो है ही।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा – अकारान्त द्विगुसंज्ञक प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् (ई) प्रत्यय होता है।

Scanned by CamScanner

उदाहरण – अकारान्त द्विगु 'त्रिलोक' से स्त्रीलिङ्ग में 'ङीप्' प्रत्यय हो 'त्रिलोक ई' रूप बनता है तब भ संज्ञा होने के कारण अन्त्य अकार का लोप होकर त्रिलोक् ई – 'त्रिलोकी' रूप सिद्ध होता है।

किन्तु अजादिगण में पाये जाने वाले द्विगु संज्ञक प्रातिपदिकों से ङीप् प्रत्यय नहीं होता, वहाँ तो 'अजाद्यतष्टाप्' से 'टाप्' प्रत्यय ही होगा। उदाहरण – 'त्रिफल' (त्रयाणां फलानां समाहारः) शब्द अजादिगण में आता है, अतः अकारान्त द्विगु होने पर भी उससे 'टाप्' प्रत्यय हो 'त्रिफला' रूप बनता है।

इसी प्रकार अजादिगण में पठित 'व्यनीक' से 'टाप्' प्रत्यय हो 'व्यनीका' रूप सिद्ध होगा।

रूपसिद्धिः – त्रिलोकी

'त्रयाणां लोकानां समाहारः' इस विग्रह में 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' से द्विगु समास होता है।

'अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः' इस वार्तिक से 'त्रिलोक' शब्द में स्त्रीत्व बताने से 'द्विगोः' से 'टाप्' को बाधकर 'ङीप्' प्रत्यय होता है।

त्रिलोक ई

'यस्येति च' से अन्त्य अकार का लोप

त्रिलोक् ई – त्रिलोकी शब्द बनता है।

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति आती है

त्रिलोकी सु

'सु' के 'उ' की इत्संज्ञा तथा लोप होने पर 'स्' शेष रहता है। त्रिलोकी स्

'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' से 'स्' का लोप होकर त्रिलोकी पद सिद्ध होता है।

Scanned by CamScanner